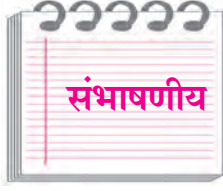


१. वसंत-वर्षा

- पद्माकर भट्ट



‘मेरी प्रिय ऋतु’ पर चर्चा कीजिए :-

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- भारत में कौन-कौन सी ऋतुएँ हैं, उनके बारे में पूछें ।
- ऋतुओं के कारण प्रकृति में होने वाले विविध परिवर्तनों पर चर्चा कराएँ ।
- उनकी प्रिय ऋतु कौन-सी है और क्यों, इसपर विद्यार्थियों को लिखने के लिए कहें।

कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में
क्यारिन में कलिन में कलीन किलकंत है ।
कहे पद्माकर परागन में पौनहू में
पानन में पीक में पलासन पगंत है ।
द्वार में दिसान में दुनी में देस-देसन में
देखौ दीप-दीपन में दीपत दिगंत है ।
बीथिन में ब्रज में नवेलिन में बेलिन में
बनन में बागन में बगरयो बसंत है ॥१॥
मल्लिक न मंजुल मल्लिंद मतवारे मिले,
मंद-मंद मारुत मुहीम मनसा की है ।
कहे ‘पद्माकर’ त्यों नदन नदीन नित,
नागर नबेलिन की नजर नसा की है ।
दौरत दरेर देत दादुर सु दुंदै दीह,
दामिनी दमकंत दिसान में दसा की है ।
बद्दलनि बुंदनि बिलोकी बगुलात बाग,
बंगलान बलिन बहार बरषा है ॥२॥

— ० —

परिचय

जन्म : १७५३ सागर (म.प्र.)

मृत्यु : १८३३

परिचय : पद्माकर भट्ट रीतिकालीन कवियों में श्रेष्ठ स्थान रखते हैं । आपने कल्पना के माध्यम से शौर्य, शृंगार, भक्ति, प्रेम, मेलों-उत्सवों, युद्धों और प्राकृतिक सौंदर्य का मार्मिक चित्रण किया है । आपकी रचनाओं में अलंकार सहज ही प्रचुरता से दिखाई देते हैं । संस्कृत, प्राकृत और ब्रजभाषा पर आपका प्रभुत्व था । दोहा, सवैया और कवित्त पर आपका असाधारण अधिकार था ।

प्रमुख कृतियाँ : हिम्मत बहादुर विरुदावली, जगत-विनोद, यमुना लहरी, गंगा लहरी आदि (काव्य ग्रंथ) रामरसायन, हितोपदेश (अनुवाद) ।

पद्य संबंधी

सवैया : यह एक वार्णिक छंद है । इसमें चार चरण अथवा पद होते हैं । वार्णिक वृत्तों में २२ से २६ अक्षर के चरण होते हैं ।

प्रस्तुत सवैयों में पद्माकर जी ने वसंत और वर्षा ऋतुओं के विविध प्रभावों को छंद बद्ध किया है ।

शब्द संसार

कछारन (पुं. दे.) = किनारे, कगार
 कुंजन (पुं.सं.) = कुंज
 पौनहु (पुं. दे.) = पवन
 पलासन (पुं.सं.) = टेसू, ढाक के फूल
 नवेलिन (स्त्री.सं.) = नववधू
 मंजुल (वि.) = सुंदर, मनहरण
 दौरत (क्रि.) = दौड़ती है ।
 दामिनी (स्त्री.सं.) = बिजली, दावनी
 बुंदनि (स्त्री.सं.) = बूँद



‘जलसंवर्धन’ के संदर्भ में जानकारी प्राप्त कीजिए।



विविध ऋतुओं में आने वाले त्योहारों के संदर्भ में जानकारी पढ़िए तथा उनके प्रमुख मुद्दों का संकलन कीजिए ।



‘वर्षा ऋतु के बाद प्रकृति का नया रूप’ इसपर अपने अनुभव लिखिए ।



आकाशवाणी पर विविध प्रांतों के लोकगीतों को सुनिए तथा कोई एक गीत कक्षा में सुनाइए ।



निम्न शब्दों को लेकर चार पंक्तियों की कविता लिखिए ।
 बादल, बिजली, धरती, नदी



(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) कविता में वर्णित इनसे प्रभावित क्षेत्र :

वसंत	वर्षा
(१)	(१)
(२)	(२)
(३)	(३)
(४)	(४)

(ख) निम्नलिखित शब्दों के लिए कविता में प्रयुक्त शब्द लिखिए :

पवन	बारिश	मेंढक	पत्ता
↓	↓	↓	↓
<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>	<input type="text"/>

(२) एक ही वर्ण का प्रयोग करते हुए अर्थपूर्ण शब्दों की रचना कीजिए तथा उनसे वाक्य तैयार कीजिए ।

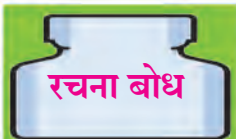
(३) निम्नलिखित पद्य पंक्तियों का भावार्थ लिखिए :

(च) द्वार में दिसान में दुनी में देस-देसन में
देखौ दीप-दीपन में दीपत दिगंत है ।

(छ) 'बद्दलनि बुंदनि बिलोकी बगुलात बाग
बंगलान बलिन बहार बरषा है।'



अंतरजाल से भारत में पाए जाने प्राकृतिक
सौंदर्यवाले दर्शनीय स्थलों का वर्णन पढ़िए ।



.....
.....
.....